श्री नेमिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

आयेंगे प्रभु नेमिनाथ जी, ऐसा मन यह कहता।
देव दुंदुभी बजा रहे हैं, ऐसा मुझको लगता।।
मंद सुगंध बयारें चलती, यह संदेशा देती।
गगन मार्ग से प्रभो आ रहे, श्रद्धा इंगित करती।।1।।
मन मंदिर में दीप जलाया, प्रभु आपके स्वागत में।
पलक पावड़े बिछा रखे हैं, प्रभु आपके आने में।।
नेमिनाथ जिन आप ज्ञान में, नहीं किसी को लाते।
किंतु भक्ति वश भक्तों के मन, प्रभुवर आप समाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(नरेन्द्र छंद)

जन्म मरण से पीड़ित होकर, निज आतम तड़पाया।
तत्त्वज्ञान से प्यास बुझाने, नाथ शरण में आया।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
जन्म जरा मृत्यु से सवमी, मुझको आज छुड़ाना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अहंकार से दग्ध हुआ हूँ, अंतर में ही जलता।
कृपा दृष्टि जब हुई प्रभु की, उसी कृपा पर पलता।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
भवाताप में झुलस रहा हूँ, मुझको आन बचाना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल भवन के वासी, धवल आपका जीवन।
नश्वर से संबंध नहीं प्रभु, रहते हो निज उपावन।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
अक्षय पद का पथ नहीं जाना, मुझको नाथ बताना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति भाव के पुष्प मनोहर, श्री चरणों में अर्पित।
इंद्रिय मन की विषय वासना, प्रभुवर आज विसर्जित।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
संयम से सुरभित हो जीवन, निज का दर्श दिखाना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग को दूर करो प्रभु, यही हृदय को भया।
करुणा सागर सरल स्वभावी, वैद्य समझकर आया।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
समता रस का पान कराकर, क्षुधा व्याधि को हरना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति से भेदज्ञान का, अंतर दीप जलाऊँ।
निज को निज पर को पर जानूँ, ज्ञान कला प्रगटाऊँ।

नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
ज्ञानमहल में घना अँधेरा, केवल ज्याति जगाना।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
मोह बली के कारण जग में, छाया घोर अँधेरा।
किंतु आपने मोह बली को, निज शक्ति से घेरा।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
कर्मों की आँधी से स्वामी, मुझको आप बचाना।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आपकी भक्ति तरु पर, शाश्वत शिवफल फलता।
पंच परावर्तन मिटता है, स्वतंत्रता को पाता।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
कर्म फलों का सर्व नाशकर, जीवन सफल बनाना।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म शक्ति को क्षय करने प्रभु, चरण शरण में आया।
ध्रुव अनर्घपद पाने का अब, अपूर्व अवसर आया।।
नेमिनाथ तीर्थंकर स्वामी, चेतन गृह में आना।
एक अकेला भटक रहा हूँ, शिवपथ मुझको दिखाना।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(भक्ति बेकार है, आनंद अपार है...)
खुशियाँ अपरंपार हैं, आनंद अपार है।
देखो आज शौरीपुर में हो रही जय-जयकार है।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन, शिवादेवी उर आये जी।
अपराजित विमान से आये, सुर नर मंगल गाये जी।।
जग का तारण हार है, गर्भ कल्याणक सार है।
देखो आज शौरीपुर में हो रही जय-जयकार है।।1।।
ऊँ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन, शौरी में जनमे जी।
समुद्र विजय नृप के आँगन में, देव नृत्य कर हरषे जी।।
जन्म कल्याणक सार है, अभिषेक की धार है।
देखो आज पांडु शिला पे हो रही जय-जयकार है।।2।।
ऊँ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पशु बंधन को देख प्रभु जी, करुणा उर में आई जी।
राजमति तज वन में जाकर, जिन दीक्षा को पाई जी।।
तप कल्याणक सार है, दीक्षा से भवपार है।
देखो सहस्र आम्र वन में, हो रही जय-जयकार है।।
यह तिथि महा सुखकार है, मेरा भी उद्धार है।
देखो सहस्र आम्र वन में हो रही जय-जयकार है।।3।।
ऊँ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आश्विन शुक्ला एकम् को, प्रभु केवलज्ञान उपाया जी।
ऊर्जयंत पर समवसरण में, दर्शन कर सुख पाया जी।।
ज्ञान कल्यशणक सार है, शिवनगरी का द्वार है।
देखो प्रभु के समवसरण में हो रही जय-जयकार है।।4।।

ऊँ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आषाढ़ सुदी सप्तम को स्वामी, वसु विध कर्म नशाया जी।
श्री गिरनार उच्च पर्वत से, मोक्ष महा पद पाया जी।।
मोक्ष कल्याणक सार है, सर्व कर्म की हार है।
देखो श्री गिरनार गिरि पर देव करें जयकार हैं।।5।।

ऊँ ह्रीं आषाढ़शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

'ऊँ ह्रीं अर्हं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नपमो नमः।'

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

त्रिभुवन के नायक, आतम ज्ञायक, प्रभु चितक में खो जाऊँ।
अघ्र्यों से वंदन, नाशूँ बंधन, मोक्षपुरी में बस जाऊँ।।1।।
हम शीश नवाये, प्रभु गुणगाये, हे नेमीश्वर विपद हरो।
शुभ आश लगाये, आनंद पाये, हमको निज पद माहिं धरो।।2।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय जय नेमिनाथ तीर्थंकर, बालब्रह्मचारी भगवान।
हे तीर्थेश परम उपकारी, करुणासागर दया निधान।।3।।
नृप समुद्र के सुत हो प्यारे, शिवा देवी माँ के नंदन।
शौरीपुर में आनंद छाया, धरा हो गई ज्यों चंदन।।4।।
बचपन से ही प्रभु आपने, अणुव्रत सा आचरण किया।
बाल क्रियायें देख देखकर, यादव कुल में हर्ष हुआ।।5।।
नारायण श्री कृष्ण देव ने, प्रभु का नाता जोड़ दिया।
राजुल से परिणय करने को, जूनागढ़ रथ मोड़ दिया।।6।।
जीवों की सुन करुण पुकारें, प्रभु के उर वैराग्य हुआ।
पशु बंधन को मुक्त किया कंगन तोड़ा निज भान हुआ।।7।।
राजुल ने तब देख लिया स्वामी ने रथ क्यों मोड़ लिया।
मुझसे आतम प्रीत तोड़ मुक्ति से नाता जोड़ लिया।।8।।
धिक् धिक् है संसार यहाँ औ, विषयभोग को है धिक्कार।
इंद्रिय सुख की ज्वाला में ही, धू धू कर जलता संसार।।9।।
जेग की नश्वरता का प्रभु ने, किया चिंतवन बारंबार।
वस्त्राभूषण त्याग दिये औ, दूर किये है सभी विकार।।10।।
मोह शत्रु को नाश किया औ, पहुँच गये स्वामी गिरनार।
भवसागर के आप किनारे, भवि जीवों के हैं आधार।।11।।
इंद्रिय सुख के कारण मैंने, नाथ आज तक पूजा की।
आत्म स्वरूप लखा नहीं मैंने, भव सागर की वृद्धि की।।12।।
माना आप नहीं पर कर्ता, आत्म तत्व के ज्ञाता हो।
भक्तों को कुछ ना देते निज सम भगवान बनाते हो।।13।।
सर्वदर्शी हैं आप किंतु नहीं तुमको देख सके कोई।
ज्ञात हो हम सब ही के नहीं जान सके तुमको कोई।।14।।
वंदनीय है स्वयं आप पर को नहीं वंदन करें मुनीश।
ऐसे त्रिभुवन तीर्थनाथ को कर प्रणाम धरकर पद शीश।।15।।

दोहा

मंगल उत्तम शरण हैं, नेमिनाथ ष्भगवान।

भाव 'पूर्ण' प्रभु भक्ति से, होता दुख अवसान।।16।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री नेमि जिनेश्वर, दया अधीश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' हरो।।

।। इत्याशीर्वादः।।